Indian Streams Research Journal
Vol -1 , ISSUE –1, Feb - 2011
ISSN:- 2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

हिंदी भक्ति साहित्य और मानवीय मूल्य

भगवान आदटराव

संतोष भीमराव पाटील महाविद्यालय , मंद्रुप, तह. द. सोलापुर, जि. सोलापुरकृ

सारांश –

शब्दकोष में मूल्य का अर्थ है, ''वह गुण अथवा तत्त्व जिसके कारण किसी वस्तु का मान या महत्त्व होता है।'' मनुष्य के संदर्भ में ऐसे गुण या तत्त्व जिन्हें जीवन में उतारने पर जीवन का मान या मूल्य बढ जाए जीवन मूल्य है।

भारतीय संस्कृति में जीवन की ओर उदात्त दृष्टि से देखा गया है। जीवन को यज्ञ कहा है। इस यज्ञ में 'षड्रिपुओं की आहुति देने से जीवन उदात्त बन जाता है। इसीलिए प्राचीन काल से धार्मिक और नैतिक शिक्षा के माध्यम से जीवन मूल्यों के संस्कार किए जाते थे।

प्रस्तावना-

मनुष्य में गुणदोषों का मिश्रण होता है। गुणों का संवर्धन और दोषों का निर्मूलन आवश्यक है। पत्थर पर संस्कार करने से उसे जब मूर्ति का रूप दिया जाता है, तब लोग उसके सामने श्रध्दा से नतमस्तक होते हैं। रास्ते पर पडा संस्कारहीन पत्थर लोगों की ठोकरें खाता फिरता है। संस्कारों से पत्थर का भविष्य बदल जाता है तो मानव जीवन भी निश्चित ही बदल सकता है। इस संदर्भ में रहीम का यह दोहा विचारणीय है-

जो नर उत्तम प्रकृति सका, का कर सकत भुजंग।
चंदन विषव्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।

युग परिवर्तन के साथ मूल्य बदलते हैं।। मगर कुछ मूल्य शाश्वत होते हैं। ये मूल्य समाज का मार्गदर्शन करते हैं।। व्यक्ति नियंत्रण रखते हैं।। अतः हर युग में इन मूल्यों पर संस्कार होना आवश्यक है। भक्तियुग में प्रतिभा संपन्न कवियों, लोक रूचि का संस्कार करनेवाले संतों एवं भक्त कवियों की ऐसी परंपरा चली जिनके साहित्य में भारतीय संस्कृति, सभ्यता, दर्शन, आचार-विचार आदि पूर्णतः सुरक्षित रहें। लोकनायक तुलसीदास ने राम में शील, शक्ति और सौंदर्य का समन्वय किया। सूरदास ने कृष्ण के लोकरंजनकारी रूप द्वारा प्रेम और विश्वास का संदेश दिया। कबीर तथा निर्गुण संतों ने ईश्वर प्रेम को प्राणि मात्र के प्रति उन्मुख कर प्रेम का दायरा विश्वव्यापी बनाया । भक्ति साहित्य 'स्वामीन् सुखाय' नहीं है। स्वान्तःसुखाय के दायरे से निकलकर यह साहित्य सबके लिए कल्याणकारी सिध्द हुआ है।

भक्तिसाहित्य में अभिव्यक्त प्रमुख जीवन - मूल्य

1.सत्संग : भक्ति साहित्य में सत्संग का महत्व अनेक उदाहरणों द्वारा व्यक्त हुआ है। सत्संगति जीवन के लिए वरदान तो कुसंगति अभिशाप की तरह होती है। साधु संतों की संगति में जीवन के सारे दुःख, दर्द, चिंताएँ व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं।। दुर्जनों का साथ कदम कदम पर संकटों का निर्माण करता है।

कबीरा संगति साधु की, हरे और की व्याधि।
संगति बुरी असाधु की, आठों प्रहर उपाधि।।

भिन्न भिन्न संगति का परिणाम कैसे होता है, इसका सुंदर उदाहरण देखें-

सीप गयौ मोती भयौ, कदली गयौ कपूर।
अहिमुख गयौ तो विष भयौ, संगति के फल सूर।।

स्वाति नक्षत्र की बूँद सीपी में मूल्यवान मोती, कदली में कपूर तो साँप के मुँह में विष बनती है।

Indian Streams Research Journal
Vol -1 , ISSUE –1, Feb - 2011
ISSN:- 2230-7850 Available online at www.isrj.net

2.परोपकार

'परोपकारार्थ इदं 'ारीरम्।' परोपकार यह एक उच्च कोटि की भावना है। परोपकार की वि"वव्यापी भावना का अनुपम चित्रण कबीर के निम्न दोहे में हुआ है–
वृक्ष कब हूँ नहिं फल भखौ, नदी न संचै नीर।
परमारथ के कारणे, साधून धरा शरीर।
रहीम ने परोपकार से मुँह मोडनेवालों को जीते जी मृतक कहा है। परोपकार में हमारा शरीर चंदन की तरह धिस जाना चाहिए।

3.समय का महत्त्व

क्षण त्यागे कुतो विद्या, क्षण त्यागे कुतो धनम्। मानव जीवन में समय का बडा महत्त्व है। समय गँवाने पर हाथ कुछ नहीं आता। महात्मा कबीर हमें समय के प्रति सचेत करते हैं–
कल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होइ रे, बहुरि करोगे कब।
रहीमदास समय के प्रति अत्यंत सतर्क एवं सजग थे। धन, सम्पत्ति, समादर, सत्त्व आदि बहुमूल्य बातें पुनःप्राप्त की जा सकती हैं, परंतु बीता शण हाथ आना असंभव है। समय चूक से उत्पन्न प"चात्ताप हृदय को जीवन भर काटता रहता है–

समय लाभ सम लाभ नहिं, समय चूक सम चूक।
चतुरन चित्त रहिमन लगी, समय चूक ही हूक।।

समय की पूजा ई"वर की पूजा है। समय के सदुपयोग से मनुष्य का शारीरिक, मानसिक तथा बौध्दिक विकास होता है।

4.समता

समता समाज के सौंदर्य का प्राणतत्त्व है। वि"ामता समाज पर कोढ है। इस कोढ ने समाज को जर्जर बना दिया है। संत कवियों ने जाति–पाति, ऊँच–नीच भेदभाव मिटाने के प्रयत्न किए। स्पृ"य, अस्पृ"य, छुआछूत के भ्रम को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परोपकार में शरीर मोमबत्ती की तरह गल जाना चाहिए। गल जाने पर मोम शेष रहता है। चंदन धिस धिस स्वयं समाप्त होता है पर दूसरों को शीतलता, सुगंध देता है, दूसरों की व्याधि हर लेता है। सचमुच तुलसीदास का यह कथन अक्षर"ाः सत्य है–
परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
पर–पीडा सम नहिं अधमाई।।

5.वाणी का महत्त्व

भक्ति साहित्य में वाणी का सामर्थ्य स्पष्ट हुआ है। खाते समय में जीभ पर नियंत्रण नहीं रखा तो वह अनेक रोगों को आमंत्रित करती है। भाषा के क्षेत्र में नियंत्रण नहीं रखा तो मानवीय संदर्भों में दरार निर्माण करती है। वाणी सुई का काम करके दिलों को प्रेम के धागे में बाँधती है, तो वह तलवार का काम कर दिलों को तोड भी सकती है। हमारी वाणी मीठी होनी चाहिए, जो हृदय से निकली हो। कबीर कहते हैं–
ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करें, आप सीतल होय।।
आखारवाली' वाणी से बनता है। तुलसीदास भी इस बात को अच्छी तरह जानते थे।
तुलसी मीठे बचन ते सुख उपजत चहूँ ओर।
वषीकरण इक मंत्र है, परिहर वचन कठोर।।

5. भील

शील परं भूषणम्। शील रक्षण तथा संवर्धन के संस्कार भक्ति साहित्य में पाए जाते हैं। जायसी के पद्मावत में रत्नसेन की मृत्यु के प"चात् पद्मावती और नागमती दोनों 'ील रक्षा के लिए जौहर करती हैं–

एहि जग काह जो अथि निआथी।
हम तुम नाह दुहू जग साथी।।

6. सर्वधर्म समभाव :

निर्गुण संत कवियों ने हिंदू-मुसलमानों में जो भेद था, संघर्ष था, उसे मिटाने का प्रयत्न किया। दानों में सुलगती द्वेषाग्निकी भायानकता से कबीर हमें सावधान करते हैं।उन्होंने दोनों धामों में प्रचलित बाह्यचारों की खबर जरूर ली, पर उस पर 'ढाई आखरवाले' प्रेम की पताका भी फहराई है। सर्वधर्म समभाव के क्षेत्र में सूफी संत भी पीछे नहीं थे। उन्होंने भारतीय लोककथाओं के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्यंजना की। हिंदू-मुस्लिम संस्कृति में मेल करने का प्रयत्न किया। तुलसीदास का चरम आदर्श है। जॉर्ज गियर्सन को यह देखकर आश्चर्य हुआ था कि, उत्तर भारत में 'रामचरित मानस' का जितना प्रचार है, उतना इंग्लैंड में बाइबिल का भी नहीं। "Over the whole of Gangetic Valley his (तुलसीदास) great work (रामचरितमानस) is better known than the Bible is England" भक्तिकाव्य में इन मूल्यों के अतिरिक्त अन्य जीवनमूल्यों की भी अवधारणा हुई है। रहिम की सतसई तो जीवनमूल्यों से भरी हुई है, जो मानव को आदर्श की ओर उन्मुख करती है।

आज संसार में नेता, इंजीनियर, डॉक्टर, वकिल आदि बड़ी मात्रा में तैयार हो रहे हैं।। मगर इस भीड़ में मानव कहाँ है? आज विज्ञान ने इतनी समृध्दि की है कि वह शाश्वत सिध्द हो रही है। विज्ञापन ने उपभोक्तावादी संस्कृति को जनसाधारण तक पहुँचा दिया है। प्रसारमाध्यम कुसंस्कारों का बीजारोपण कर रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में भक्ति साहित्य में अभिव्यक्त जीवनमूल्यों का पुनर्विचार होना आवश्यक है। इतिहास केवल गढ़े मुर्दे उखाड़ना नहीं है। उसके आलोक में वर्तमान को सुधारकर भविष्य को सँवारना है। मनुष्य को अन्नमय कोष से आनंदमय कोष तक ले जाने के लिए इन शाश्वत मूल्यों के संस्कार बचपन से ही बालक के मन पर होना आवश्यक है। परिवार, पाठशालाएँ, महाविद्यालय, समाज सभी संस्कार केंद्र बन जाने चाहिए। तभी हम ज्ञान-विज्ञान के दो पंखों से भविष्य में सफल उड़ान भर सकते हैं,

संदर्भ :-

1) कबीर का मानवतावाद - आ. भगवानदास कबीर पंथी
2) मानवतावाद और साहित्य - डॉ. नवल किशोर
3) कबीर बानी - डॉ. अली सरदार जाफरी
4) सांस्कृतिक एवं मानवतावादी चेतना - डॉ. सच्चिदानंद राय
5) मध्ययुगीन भक्तिकाव्य के विचार पक्ष का आलोचनात्मक अनुशीलन- डॉ. शिवप्रसाद शुक्ल